आदि काल

प्रश्न — आदिकालीन हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालो?

(क) हिन्दी साहित्य का आदि काल पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियाँ शीर्षक पर एक संक्षिप्त निबंध लिखिए।

(ख) आदि कालीन हिन्दी साहित्य की परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हुए उनकी सामान्य प्रवृत्तियों का उल्लेख कीजिए?

(ग) समाज की परिस्थितियों के अनुसार साहित्य सदा अपने रूप परिवर्तित करता रहता है। आप की दृष्टि में यह उक्ति हिन्दी साहित्य के आदि काल पर कहाँ तक चरितार्थ होती है? तर्क संगत विवेचना करते हुए आदिकालीन मूल प्रवृत्तियों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए?

उत्तर — आदिकालीन हिन्दी साहित्य में भाव और भाषा की दृष्टि से अनेक विविधताएँ दिखती हैं। इन विविधताओं का मूल कारण तत्कालीन परिस्थितियाँ ही हैं। ये परिस्थितियाँ ही आदिकालीन हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि हैं जो निम्न हैं—

1. राजनीतिक परिस्थितियाँ ⟶ भारतीय इतिहास में आदिकालीन युग राजनीतिक दृष्टि से अव्यवस्था, विशृंखलता, गृह कलह और पराजय का युग था। इसके चलते अक्सर उत्तरी भारत अशान्त था। साथ ही विदेशी आक्रमणों और राजाओं की परस्पर विद्वेष भावना के कारण देश खोखला सा होता जा रहा था। मुहम्मद गजनवी और मुहम्मद गोरी के आक्रमणों ने भारत के तत्कालीन परिस्थितियों को ही बदल डाला। प्रबल विरोध के बावजूद मुस्लिम पक्ष का पुनः धीरे-धीरे उत्तरी भारत में पैर पसारने लगा।

उस समय की राजनीतिक परिस्थितियों से यह बिल्कुल स्पष्ट है कि हमारे देश में राष्ट्रीयता की भावना संकुचित हो गयी थी और देश खंड-खंड राज्यों में विभाजित था। इसमें कोई संदेह नहीं कि हमारे यहाँ अनेक वीर शासक थे पर वे विदेशी आक्रमण के समय अपने पड़ोसी राजा

राजा को सामन्तों पर [illegible] था और [illegible] सामन्त [illegible] थे। वे आपस में [illegible] राजा को [illegible] इस प्रकार के सामन्तों के [illegible] भारत की राजनीतिक [illegible] [illegible] [illegible] संयुक्त होकर विदेशी आक्रमणों का सामना [illegible] [illegible] भारत की राजनीतिक [illegible] और [illegible] राजा [illegible] राज्य था और राजा के [illegible] कर [illegible] प्रकार भारत में राजनीतिक [illegible] का [illegible] रहा था और [illegible] [illegible] [illegible] राजनीतिक [illegible] [illegible] का [illegible] ही [illegible]।

2. **धार्मिक परिस्थितियाँ** – इस समय धार्मिक परिस्थितियाँ भी [illegible] के विरुद्ध [illegible] और जैन [illegible] धर्मों के [illegible] से [illegible] बौद्ध धर्मों और जैन धर्म [illegible] वास्तविक आदर्शों को दूर करते [illegible] आडम्बरों का [illegible] ही रहा था शंकराचार्य (788-820 ई॰) ने प्रबल प्रहारों से बौद्ध धर्म को [illegible] व [illegible] मंत्र तंत्र [illegible] के सिद्धान्तों को [illegible] गया। वस्तुतः इन [illegible] का व्यावहारिक [illegible] क्रान्तिकारी सिद्ध हुआ। लोगों का नैतिक पतन इस काल में [illegible] हुआ। मनुष्यों की [illegible] को [illegible] प्राप्त हुआ [illegible] की प्रगति रुकी। इस प्रकार देश का नैतिक स्तर गिरने लगा और धर्म के नाम पर [illegible] का प्रचार होने लगा। बौद्ध धर्म की तरह वैष्णवों [illegible] वाममार्गियों की [illegible] मिलने लगी। जैन सम्प्रदाय में भी तांत्रिक [illegible] पद्धति का प्रचार हुआ तथा भारतीय समाज का [illegible] इस प्रकार [illegible] एवं विकृत धर्मों का [illegible] गया।

[illegible]

3. सामाजिक प्रतिक्रियाएँ — [illegible]

[illegible] सामाजिक प्रतिक्रियाओं [illegible]

[illegible] सामाजिक परिवर्तनों [illegible] हिन्दुओं [illegible]

[illegible] हिन्दुओं की भावनाएँ परिवर्तित होने के कारण [illegible]

[illegible] होने के कारण [illegible] की भावना

बलवती होती जा रही थी। तो राजपूतों एवं राजपूत रमणियों में वीरता और आत्मोत्सर्ग की उल्लेखनीय विशेषता अवश्य थी। उस समय स्वयंवर प्रथा का विशेष रूप से प्रचार था और कभी-कभी इस पवित्र धार्मिक कृत्य के समय युद्ध भी नारियाँ भी वह गाथा करती थी। यद्यपि राजपूत, हठ प्रतिज्ञा वीर कर्मठ एवं ईमानदार थे परन्तु वे रूढ़िवादिता और दूरदर्शी भी थे। उनमें भोग विलासिता की भावना भी प्रबल थी जनता में मनोबल की कमी थी और यदि हम विचार पूर्वक देखें तो इस सामाजिक अवस्था का चित्रण तत्कालीन हिन्दी साहित्य में दृष्टिगत होता है।

साहित्यिक परिस्थितियाँ → यद्यपि यह युग पारस्परिक कलह और बाह्य संघर्षों का युग था परन्तु संस्कृत साहित्य का निर्माण अबाध गति से होता रहा। ज्योतिष, दर्शन और स्मृति आदि विषयों पर टीकाएँ लिखी जाती रहीं। नाटक कविता और समीक्षा आदि के क्षेत्र में भवभूति और राजशेखर जैसे श्रेष्ठ साहित्यकार हुए। पांडित्य प्रदर्शन और अलंकार चमत्कार दिखाना संस्कृत साहित्यकारों का लक्ष्य हो गया। 12वीं शताब्दी में रचित श्रीहर्ष के "नैषधचरित्र" इस कथन का प्रमाण है। तत्कालीन देशी राजाओं ने साहित्य की ओर कुछ ध्यान दिया। राजा भोज न केवल उच्च कोटि का विद्वान थे बल्कि कवियों के आश्रयदाता भी थे उनकी सरस्वती कंठाभरण और शृंगार प्रकाश आदि कृतियाँ संस्कृत साहित्य की निधियाँ हैं। उसकी राजसभा में पदमगुप्त और धनिक जैसे विद्वान भी थे। साथ ही जयदेव जैसे सुकवि, कुन्तक महिम भट्ट क्षेमेन्द्र और विश्वनाथ जैसे आचार्य तथा सोमदेव जैसे कवि भी इसी समय हुए।

सामान्यतः संस्कृत साहित्य की उन्नति की दृष्टि से यह युग अवश्य प्रशंसनीय रहा पर आदिकालीन हिन्दी साहित्य पर उसका कोई विशेष प्रभाव न पड़ा।

परन्तु इतना ~~[illegible]~~ भी सत्य है कि तत्कालीन संस्कृत साहित्य का शनैः शनैः ह्रास हो रहा था और पाली दूसरा अपभ्रंश और देशी भाषा में रचित साहित्य की भी थी।

उक्त परिस्थितियों के होते हुए भी इस काल में सिद्धों, नाथपंथी योगियों, जैन धर्म के अनुयायियों, चारणों आदि की रचनाएँ भी प्रकाश में आईं। इसके अतिरिक्त अन्य विभिन्न विषयों पर भी कुछ कवियों ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत की। एक विचारक ने यहाँ तक कहते हैं — "देश-काल की रचनाओं में हिन्दी की बुनियाद मिलती है, हिन्दी का बीज मिलता है। यहीं से हिन्दी की इस "नींव [illegible] की [illegible] तक हिन्दी [illegible] है।"